भगवत् कृपा

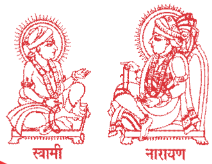

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संगपत्रिका

वर्ष–15, अंक–9 शनिवार, 26 सितं.' 92	सम्पादक : साधु मुकुंदजीवनदास गुरु ज्ञानजीवनदासजी सितम्बर, 1992	वार्षिक चन्दा–30.00 प्रति अंक : 3.00

अमृतसेतु

[हम सब के प्यारे प्रभु प.पू. काकाजी का अमृत महोत्सव (75वीं जन्म जयंती) का महामंगलकारी वर्ष–'1993' आ रहा है.... सर्व गुणातीत स्वरूपों की छत्र-छाया में दिल्ली में 3rd Feb. के दिन-वह अमृतपर्व मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा के साथ-साथ मनायेंगे। हमारे भाग्य का तो पार नहीं कि रोम-रोम में भगवान प्रकटाये परम पवित्र पुरूष गरजू बनकर हमारे जीवन में आ गये....हमें अपनी गोद दी और उनके संग जीवन जीये !!...कैसे ऋण चुका भी पायेंगे इनका?

पू. काकाजी के निम्नलिखित दो आंशिक पत्रों से ही स्पष्ट होता है कि हमें कैसी भव्य प्राप्ति हुई है....और इनके संबंध में आने के बाद हमें क्या करना है? और इससे भी अधिक–कैसी कल्पना से परे की प्रीति होगी। हम सबसे उनकी? कितना अपना माना होगा हमें–जो ऐसा सचोट व स्पष्ट मार्गदर्शन हमारे लिए खुला रख दिया कि आज भी यदि करने लग जायें तो परम सुखी हो जायें व देह रहते हुए अक्षरधाम का सुख-शांति आनंद प्राप्त करें.....

आईये, हम सब मिलकर इस रहस्य का मनन चिंतन करके समझने का प्रयास करें। इन वाक्यों को अपने जीवन का आधार बना लें ताकि 'अमृत महोत्सव' तक में प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों हमारी सब कसर टाल कर हमारी साधना की पूर्णाहुति करा देवें....यही अंतर की आरजु.....]

❑ .....मुझे तो
पू.बापा ने अनुपम ही पसंदगी में चुना था,
सो,
सर्वांगी विकास में और सर्वोच्च ब्राह्मीस्थिति में
तकलीफें बाधारूप नहीं बनी
और
मूल रहस्यों गौण नहीं हुए–
अक्षरपुरुषोत्तम उपासना
व
जीव को ब्रह्मरूप करके परब्रह्म में जोड़ने के मूल उद्देश्य में सहज स्थिति व सिद्धि पू. बापा ने दे दी.....
जिससे
सभी भूमिकाओं में अखंड शांति और आनंद रहा....

स्वीट्जरलैंड, 15-7-'77

❑ गुरु बहुत होते हैं,
परन्तु
सद्गुरु कम।
और
सच्चा सद्गुरु तो शायद ही मिले
और
मिल भी जाये तो–
उसके जोग में रहना कठिन।
यदि रहें भी, तो–
अखंड दिव्यभाव रखना कठिन।
वह भी रखें तो–
स्वभाव टाल कर टिकना कठिन।
वह भी कर लें तो–
उसकी अनुवृत्ति में रहना कठिन।
वह भी हो जाये, तो–
उसके अभिप्राय की भक्ति करनी कठिन।
और
वह भी हो, पर–
भिन्न-भिन्न प्रकार के–भिन्न रुचि वाले मुक्तों के साथ
दिव्यभाव ही रखकर–साधुता रखकर
सरलता वर्तना–सर्वोत्तम स्थिति है।
और तब–
पूर्णता ही प्रगटे
और
Final stage सिद्ध हुई मानी जाये।
तो,
यह **एकता व समता** दृढ़ करते जाना।
दूसरा क्या कर रहा है?
वह
जरा भी नज़र में नहीं लेना।
हमें
प्रभु को याद करके
उन्हें ही सब करने देना है।

शब्द द्वारा परमात्मा के स्वरूप के ज्ञान का उपदेश करे वह गुरु।
सभी में परमात्मा का दर्शन कराये वह सद्गुरु।

–प.पू. काकाजी महाराज
शिकागो, 12-5-'77

ब्रह्मप्रवाह

विज्ञान और धर्म ने पूर्व और पश्चिम की संस्कृति में परमतत्त्व के अस्तिव की-इसे ब्रह्म कहो, अवतार कहो, शक्ति कहो, पैंगबर कहो परन्तु वह एक और अद्वितीय सत्य की अंखडितता सिद्ध करी है, मान्य करी है....और इसकी भूख, प्यास, तमन्ना, गरज भिन्न-भिन्न स्वरुप में सर्वत्र दिखाई पड़ती है। परन्तु, इसे प्रगट करने के लिए—जीवन का प्रवाह जिस धारा में बहता है उन द्वन्द्वों से पर होने के लिए—वह दिव्य तत्त्व जो कि मानवरूप में प्रगट हुआ—मूर्तिमान हुआ, उसके साथ एक अनन्यभाव का संबंध दृढ़ करना पड़ता है। इसके लिए यदि तीव्र अभीप्सा होगी, संकल्प होगा, निश्चय होगा, निर्णय होगा तो ऐसे सच्चे सत्पुरुष मिल ही जायेंगे। श्रेयार्थी साधकों को—सत्य शोधकों को इसकी पहचान होगी।

अपने तरीके का ज्ञान, अपनी समझदारी, साधना या तपस्या यहाँ बंधनरूप है। परन्तु ऐसे सत्यस्वरूप संत की कृपा से संबंध होने पर बालक को जैसे माँ का प्रेम मिलता है वैसे आध्यात्मिक संबंध बंधता है। और उसकी पहचान होने पर अर्जुन की भाँति सखाभाव से या गोपियों की भाँति मधुर-भाव से या हनुमानजी की तरह दासभाव से या ऐसे अन्यभाव से सब-सब के अंग के मुताबिक भक्तभाव दृढ़ होता है।

व्यक्त और अव्यक्त इस दिव्य तत्त्व की सच्ची समझ होगी तो वह 'परात् परः' रहने वाली है। और जैसे-जैसे हम उसे दिव्य मानेंगे, वैसे दिव्य बनकर सुख, शांति, आनंद और बल उत्तरोत्तर देह रहते हुए ही प्राप्त करेंगे। वासना, इच्छा, ग्रन्थि, स्वभाव, प्रकृति इस प्रकार ही टलेगी। सो, उससे लड़ने के बजाय इस शक्ति का आह्वान करके, प्रार्थना करके, निखालसभाव से और दिल की सच्चाई से उसका सहारा यदि लेंगे तो हमारा घर और हमारा समाज दिव्य बनेगा, राग-द्वेष रहित बनेगा और सच्चा सुख, शांति, आनंद भोगते हो जायेंगे।

प.पू. योगी बापा ऐसी विरासत, छोड़कर गये हैं। तो उनके साथ—अपने तरीके का नहीं परन्तु—सच्चा दिव्य संबंध कि जिसमें चाहे कैसे भी प्रसंग या परिस्थिति में आत्मीयता खंडित ही न हो—यह कर लेने सूझ आए ऐसा बुद्धियोग देवें—आशीर्वाद बरसा दें—यही नूतन वर्ष पर सभी की ओर से अभीप्सा !

—आपके ही
दादुकाका के
नये वर्ष के खूब ही हेतपूर्वक
जय स्वामिनारायण !

❖ ❖ ❖ ❖

धरती के मंगल 'गुरु गुणातीत' का प्रागट्य दिन

'शरदपूर्णिमा'.....धरती का अखंड सौभाग्यवती होने का शुभ दिन....मुमुक्षुओं के सर्वदा सनाथ होने का दिन–अर्थात्, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का–'स्वयं प्रकाशित' हीरे का प्रागट्य दिन.....

आत्मा की शांति प्राप्त करने के लिए जीवों के कल्याण के लिए या प्रभु प्राप्ति के लिए जगत में अनेक सम्प्रदाय हैं जिनके द्वारा साधना के विविध प्रकार बताकर अब तक के युग पुरुषों ने संसार का मार्गदर्शन करने का प्रयास किया है। महावीर प्रभु आये; उन्होंने देह दमन और तपस्या का मार्ग बताया। भगवान बुद्ध आये; उन्होंने अहिंसा का मार्ग बताया। ईसामसीह आये; उन्होंने मानवप्रेम वे सेवा का मार्ग बताया। मोहम्मद पैगम्बर आये; उन्होंने संगठन और कुरबानी का मार्ग बताया। जगद्‌गुरु शंकराचार्य आये; उन्होंने ज्ञान मार्ग प्रवर्ताया। श्रीमद् बल्लभाचार्य आये; उन्होंने भक्तिमार्ग अपनाया। पांच हजार साल पहले भगवान कृष्ण मानवस्वरूप में साक्षात् स्वयं धरती पर आये और 'युगे-युगे संभवामि' का अभय वरदान देकर मानव जाति को सनाथ किया। इससे आगे जाकर भगवान स्वामिनारायण ने मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी (स्वामिश्री) को साथ लाकर ज्योत से ज्योत जलती रखने गुणातीत भाव में रहते संतों और मुक्तों द्वारा 'मैं धरती पर अखंड रहूँगा।'–ऐसा वरदान देकर मानवजाति को सनाथ किया–अखंड सौभाग्यवती बनाया। मानव जीवन के अंतिम ध्येय के सम्यक् दर्शन के साथ साधना अत्यंत आसान व सरल बनाई और स्वयं के जीवन व कथन द्वारा स्वामिश्री ने सबको सचोट रीत से समझाया कि प्रत्यक्ष भगवत्स्वरूप की मर्जी में वर्तना और उसके वचन से केवल गुरुमुखी जीवन जीकर उसे राजी करके साधुता के गुण प्राप्त करना–वही लक्ष्यभेदी अर्थात् अंतिम साधना है। आध्यात्मिक समाज के सर्जन का सारा श्रेय स्वामिश्री को जाता है।

सचमुच यदि स्वामिश्री धरती पर नहीं आये होते तो 'साधु' शब्द शब्दकोष में ही रह जाता। साधु किसे कहते हैं इसका किसी को ख्याल भी न पड़ता और प्रत्यक्ष स्वरूप की अनुपम सेवा भक्ति कैसे करनी–वह एक कल्पना ही बनी रहती.....

भगवान रखे साधु व सिद्धमहात्मा में खूब फर्क होता है। सिद्ध महात्मा आपको धन, लड़का, भौतिक पदार्थ क्षणिक सुख आदि सब दे पायेंगे, पर भीतर, की गटर साफ करके–स्वभाव का परिवर्तन करके चेतना की भूख को तृप्त करके आत्मा का शाश्वत् सुख केवल भगवान रखे साधु ही दे पायेंगे। सिद्ध महात्मा तो कई मिल जायेंगे, परन्तु भगवान रखे साधु का मिलना अत्यंत दुर्लभ है। कई जन्मों की पूजा, भक्ति, आराधना सत्कर्मों, पुण्यों के फलस्वरूप हमारे जीवन में साधु का दर्शन होता है। दर्शन के बाद उसकी यथार्थ महिमा समझकर, उसके साथ हुए संबंध को संभालना व उसका जैसा वास्तविक स्वरूप है, वह पहचानना–वह तो मुमुक्षु की सुरुचि गरज देखकर 'साधु की कृपा' से ही संभव है।

जूनागढ़ मंदिर में मूर्तिप्रतिष्ठा करने के समय पर महाराज ने भरी सभा में कहा था–'तमाम परमहंसों, त्यागियों और हरिभक्तों साल में एक महिना गुणातीतानंदस्वामी का समागम करने यहाँ (जूनागढ़) अवश्य आना। यहाँ स्वामिश्री का समागम करने जो आएगा **उसकी करोड़ जन्म की कसर मैं एक जन्म में टालूँगा।**' महाराज के कहे इन अमृत वचनों से ही ऐसे संत के अद्‌भुत सामर्थ्य का खयाल पड़ जाता है....

जूनागढ़ के नवाब ने महाराज को कहा था कि जूनागढ़ मंदिर में आप जैसा ही फकीर रखना। सो, महाराज जब जूनागढ़ मंदिर की मूर्तिप्रतिष्ठा करके गढ़डा जाने की तैयारी करने लगे तो नवाब साहब ने कहा कि 'आप जाने के लिए क्यों तैयार हुए? आपको तो यहीं रहना है।' महाराज ने स्वामिश्री की ओर निर्देश करते हुए कहा कि **आपको दिए वचन के मुताबिक हमने हमारे जैसे समर्थ को यहाँ रखा है। जैसे हम है वैसे ही ये हैं।** महाराज व स्वामिश्री के संबंध की हम क्या कल्पना कर पायेंगे?

महाराज को अखंड धार कर रखने वाले और महाराज के रहने का धाम होते हुए भी अपनी सम्पूर्ण प्रतिभा, ऐश्वर्य छिपाकर स्वामिश्री महाराज के संबंध वालों के प्रति एक सामान्य सेवक की अदा से ही जिये....उनके माहात्म्य व सेवकभाव के मूर्तिमान स्वरूप का दर्शन निम्न प्रसंग द्वारा होता है।

एक बार स्वामिश्री और सद्. गोपाळानंदस्वामी वड़ताल, सारंगपुर, बोटाद आदि स्थानों का विचरण करते हुए गढ़डा पहुँचे। वहाँ पहुँचकर सद्. गोपाळानंदस्वामी की तबीयत थोड़ी अस्वस्थ हो गई। परन्तु वहाँ से स्वामिश्री के साथ उन्हें जूनागढ़ जाना था, इसलिए सद्. गोपाळानंदस्वामी ने सहज ही स्वामिश्री को कहा कि 'काठियावाड़ की भूमि पथरीली होने के कारण बैलगाड़ी में खूब हिचकोले लगते हैं सो अच्छी तरह से बैलगाड़ी चलानी आती हो उसे साथ ले लो ताकि सुख से जूनागढ़ पहुँचा जा सके।' स्वामिश्री ने तो बैलगाड़ी तैयार करी व सद्. गोपाळानंदस्वमी को अंदर आराम से बिठाया और बैलों के हांकने वाली जगह पर स्वयं बैठे। सद्. गोपाळानंदस्वामी ने कहा—स्वामी ! आप कहाँ बैलगाड़ी हांकने बैठे? स्वामिश्री बोले—आपको बिल्कुल कहीं भी हिचकोला ना लगे इसलिए मैं ही बैलगाड़ी हांक लूंगा !....स्वयं साकार ब्रह्म का स्वरूप होते हुए, अत्यंत ज्ञानगरीबी धारण करने में ही सच्ची महंताई, बड़प्पन माना था....स्वामिश्री का जीवन ही मूर्तिमान गुणातीत ज्ञान है.....

अत्यधिक आनंद की बात यह है कि आज इसी गुणातीत भाव को पायी हुई समर्थ विभूतियों की सेरे-छाया में हमारी परवरिश हो रही है..... 1st Sept.1974 के महामंगलकारी दिन—प.पू. पप्पाजी का हीरक महोत्सव मनाया जा रहा था, तब प.पू. काकाजी अपनी ओर निर्देश करते हुए खूब दिलेरी से बोले थे—**'साक्षात् गुणातीत कहते हैं आज.....'**

इस एक वाक्य को अंतर की गहराई से सोचेंगे तो ख्याल आयेगा कि प.पू. काकाजी के रूप में हमें क्या प्राप्ति हुई थी। मूल अक्षरब्रह्म के साधर्म्य को पाई वह विभूति ही थी न? आज भी वह तत्त्व गया नहीं है। नित्य, नवीन, दिव्य स्वरूप में अब भी प्रगट है.....करोड़ों जन्मों की कसर एक जन्म में ही टालने वाले अब भी मौजूद हैं।

तो, अब ऐसे प्रभु के साथ—प्रभुस्वरूप संत के साथ यदि सरल सेवक बनकर वर्तेंगे तो प्रभु बुद्धियोग दे देंगे और संबंध वाले मुक्तों के साथ यदि सरल सेवक बनकर बर्तेंगे तो प्रभु महिमा का साक्षात्कार करा देंगे। स्वामिश्री व प्रत्यक्ष स्वरूपों का जीवन और उनके द्वारा कहे गए वचन निष्ठापूर्वक अपने जीवन में उतारने की कोशिश करें—वही उनकी सच्ची महिमा समझी कही जायेगी।

हम सब 'गुणातीत' के वंशज कहे जाते हैं तो परम साधुता के रास्ते पर—साधु यानि सहन करे—सभी का ही सहन करे वह साधु—इस मार्ग पर प्रस्थान करें—पहली सीढ़ी चढ़े।

ऐसे 'गुणातीत साधु' का सही अर्थ में सेवन करके उनके गुणों को प्राप्त करके, उनकी विरासत को संभालें व यही शरद्पूर्णिमा के महामंगलकारी दिन पर गुरु गुणातीत व प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों के चरणों में प्रार्थना !

❑ ❑ ❑

'विजयादशमी.....शरद्पूर्णिमा और प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी'

विजयादशमी व शरद्पूर्णिमा का महामंगलकारी दिन....असुर रावण का वध करने के लिए भगवान श्रीरामचन्द्र ने दशहरा 'विजयादशमी' का ही दिन चुना....और गुरुहरि योगजी महाराज ने हमें एक सच्ची सूझ देने व करोड़ों जन्मों से चिपके स्वभाव व प्रकृति के जड़बंधनों से मुक्त कराने, सूक्ष्म के, कारण शरीर के भाव टालकर, जीवन में प्रभु प्रगटाने का अनमोल अवसर देने अपने लाडले सेवक 'प्रभुदासभाई' (प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसाद स्वामिजी) को पार्षदी दीक्षा देने 'विजयादशमी' का ही दिन चुना....स्वामिनारायण भगवान की सच्ची सर्वोपरिता यही तो है कि उन्होंने अखंड गुणातीतभाव में विचरते स्वरूपों सदैव धरती पर रख दिए ! और शरद्पूर्णिमा—जो कि पहले ही गुणातीत के धरती पर प्रागट्य होने के कारण पूर्णतया मांगल्यपूर्ण थी.....उसे और अधिक चिरस्मरणीय बनाया गुरुहरि योगीजी महाराज ने—प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी को शरद्पूर्णिमा के महामंगलकारी दिन भागवती दीक्षा देकर....इन दोनों दिनों को चुनने के पीछे गुरुहरि योगीजी महाराज जरूर रहस्य समझाना चाहते थे...इंद्रियाँ अंतःकरण से युद्ध करके उन पर विजय पाना—वही सच्ची विजयादशमी और शरद्पूर्णिमा यानि पूर्ण ब्रह्म की मंगलकारी अवस्था....सो, प.पू. स्वामिजी को गुणातीत परंपरा का वारिसदार बनाने, इन विशेष दो दिनों पर ही बापा ने संकल्प किया....ऐसे समर्थ इंजन का निर्माण किया जो अपने संबंध में आने वाले चैतन्यों को अक्षरधाम की ओर अत्यंत धीरज, प्रेम, आत्मीयता व आनंद कराते-कराते इस भवसागर से पार उतार दें.....

गुरुहरि योगीजी महाराज अत्यंत पारदर्शक विभूति थी, वे तो आने वाला समय देख रहे थे। आज जीवमात्र दुःखी है—कोई तन से, कोई मन से, कोई धन से—मानसिक कुंठाओं से ग्रस्त हैं...वास्तव में जीवन में सच्चा अमरत्व पाने भगवान रखे ऐसे भगवत्स्वरूप संत की गोद अनिवार्य है....जिससे अपना जीवन धन्य-धन्य हो जाये....मन भरा-भरा लगे। मन को सही अर्थ में भरा-भरा कौन बनायेगा? इसलिए ही प्रभु करुणा करके मानवस्वरूप में स्वयं धरती पर आते हैं....और अपने साथ अपना कार्य करने ऐसे ध्रुवतारक संत साथ में ही लाते हैं....प.पू. स्वामिजी के बारे में बापा द्वारा कहा गया यह प्रसंग इस बात की पुष्टि करता है.....

एक बार प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी व पू. महंत स्वामिजी सेवक के रूप में बापा के साथ काठियावाड़ के विचरण में थे....बापा बैलगाड़ी में बैठे थे और ये दोनों सेवक बापा के पांव दबा रहे थे....बापा सामने बैठे इन दोनों युवकों को देखकर मंद-मंद मुस्कुरा रहे थे। थोड़ी देर बाद स्वामिजी ने हिम्मत करके बापा को पूछा कि बापा आप हम दोनों को देखकर क्यों मुस्कुरा रहे हैं?

बापा फिर जोर से हंसे और प्रसन्नता से बोल उठे—'**गुरु ! अक्षरधाम में हम ऐसे के ऐसे ही साथ बैठे हैं।** यह सुनकर दोनों सेवकों के मन में आनंद समाया नहीं—कि अहो अहो ! हमें कैसी अद्‌भुत प्राप्ति !

इससे भी अधिक प.पू. स्वामिजी ने हम सब के लिए आदर्श रखने गुरुहरि योगीजी महाराज के साथ गुरु-शिष्य का अनुपम संबंध किया.....अपनी पूर्ण लगन व निर्दोषबुद्धि की सेवा से बापा को इतना राजी कर लिया कि बापा के दिल से आशीर्वाद फिसल गये—

'आशीर्वाद पत्र !'

दाः साधु ज्ञानजीवनदास के खूब हेतपूर्वक जय स्वामिनारायण स्वीकारना !

हरिप्रसादस्वामी नूतन वर्ष के ता. 1-1-66 के शुभ आशीर्वाद।

विद्या सम्पन्न, ज्ञान सम्पन्न, भक्ति सम्पन्न आनंद के साथ स्वामी (गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज) आपको देंगे। हजारों मनुष्यों को आप ज्ञान दोगे, ऐसी शक्ति आपको वे देंगे....

श्री अक्षर मंदिर-गोंडल से ता. 1-1-66 को गुरुहरि योगीजी महाराज ने यह आशीर्वाद पत्र लिखकर भेजा था....अपने गुरु के दिल की प्रसन्नता पा लेना—वही तो साधक की साधना की पूर्णाहुति है न ?

आज गुरुहरि योगीजी महाराज की परावाणी को हम साकार देख रहे हैं। प.पू. स्वामिजी के जीवन में धर्म, ज्ञान, वैराग्य व अपने गुरु के प्रति पराभक्ति अदा करने की उत्कंठा—भावना देखकर ही, उनकी आध्यात्मिक स्थिति का सहज दर्शन होता है। उनमें भगवान अखंड निवास करके रहे हैं ऐसा अनुभव उनके संबंध में आने वाले हरेक को होता है। आज देश-विदेश के हजारों भक्तों का एक आत्मीय समाज तैयार हो रहा है। पढ़े-लिखे संतों का एक वृंद, सहिष्णु युवकों, आजीवन व्रतधारी बहनें व अंबरीष गृहस्थ ही प.पू. स्वामिजी की महिमा का सम्यक् दर्शन कराते हैं।

प.पू. स्वामिजी अल्प संबंध वाले मुक्तों का दोष त्रुटियां—स्वभाव देखे बिना उनका सदा हित और श्रेय ही चाहते हैं। सुरुचि, आत्मीयता, निष्ठा, विश्वास व महिमा—इन्हीं शब्दों का हार्द सेवकों को समझाने दिन-रात अविरत परिश्रम कर रहे हैं। प.पू. स्वामिजी के जीवन से स्पष्ट दिखाई पड़ता है कि आत्मीयता तो महिमा और स्वरूपनिष्ठा के अधीन है। असल में गुणातीत पुरुषों का संबंध ही सर्वोपरि साधना और सर्वोपरि प्राप्ति है। इतनी भव्य प्राप्ति व प्रत्यक्ष-स्वरूपों का दिन-रात का परिश्रम देखकर हृदय से अपने-आप प्रार्थना निकलती है कि हे प्रभु ! आपके सिवा हम कहीं और ना बंधे, केवल आप में ही बंधे ऐसा कर दो। इस लोक में, मनमुखी संकल्पों में, मुक्तों की या शिष्यों की महोब्बत में, धर्म, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति के भार में, खुद की मानीनता व सत्य में ना फंसकर केवल आपकी मर्जी में—आपकी अनुवृत्ति में जुड़ पायें—ऐसी विजयादशमी व शरद् पूर्णिमा के पवित्र दिन पर प्रार्थना।

❁ ❁ ❁

आईये—आईये, साक्षात् प्रभु की निश्रा में दीपावली व नूतन वर्ष मनाएँ.....

हर साल की तरह रंग-बिरंगे, झिलमिल दीपकों की लौ से उजाजा फैलाने, खुशियों व उमंगों का दिव्य संदेश लेकर दीवाली व नूतन वर्ष द्वार पर आ पहुँचा....जगत की दृष्टि से दीवाली अलग अर्थ रखती है लेकिन प्रगट के उपासकों की दीवाली एकदम अलग प्रकार की होती है क्योंकि भगवान व संत की गोद में बैठने वालों की तो अखंड दीवाली व नित्य नूतन वर्ष ही है। गोद में बैठना यानि क्या? कैसे भी संजोगों में केवल भगवान का दृढ आसरा पकड़े रखना.....भगवान का सही अर्थ में दृढ़ आसरा किया—कब कहा जाये? जब हम—

—हरेक प्रसंग पर प्रभु के ही कर्ता हर्तापन का हर्ष से स्वीकार करें,

— प्रभु का ही बल लें,

— प्रभु का ही संबंध देखें,

—और कोई उपाय-आधार न लेकर केवल धून्य भजन का आधार लें,

—उनकी मर्जी में ही वर्ते,

— उन्हें राजी करने की सुरुचि कदापि न छोड़े,

— काल, कर्म, माया से डरकर अपना स्वधर्म ना छोड़े—

जिसे भगवान का ऐसा दृढ़ आसरा होगा उसके हृदय में उदासी, विक्षेप, निराशा, हीनता, दुःख जैसी चीज़ तो टिक ही नहीं पायेगी....आनंद कभी जायेगा ही नहीं....हर रोज़ दीवाली व नूतन वर्ष ही लगेगा। प.पू. काकाजी से हम सबने कितनी बार कहते सुना था—**'सूर्य के रथ में अंधकार कहाँ से? अरे ! प्रकाश और अंधकार एक साथ कैसे टिक सकता है?'**

वास्तव में कई जन्मों से अनेक प्रकार की योनियों में से पीड़ा झेलते-झेलते भटकने के बाद हमें जो यह मानव देह की अनमोल प्राप्ति हुई है, उसका हमें ख्याल नहीं, सो ही मानवरूप में मिली इस देह का—चंदन की लकड़ी को व्यर्थ में जलाते जा रहे हैं... जीवन के अमूल्य क्षणों को हम यूं ही तेरा-मेरा, अपना-पराया फलां ऐसा-फलां वैसा करने में गंवा रहे हैं... दूसरी ओर जीवन की एक-एक सैकण्ड को मंगलमय बनाने, हर्ष, शोक, मान-अपमान, यश-अपयश, सुख-दुःख में समता रखकर देह रहते हुए अखंड अक्षरधाम की भूमिका में रहता करने गुणातीत स्वरूपों हमारे जीवन में आये हैं। उनकी कृपा, उनकी हृदय विशालता, उनके परिश्रम को समझकर इस चंदनरूपी लकड़ी का सही उपयोग करना—वही इस मनुष्य जीवन की सार्थकता कही जाये.....

इस बार की दीवाली व नूतन वर्ष हमारे लिए एक अविस्मरणीय—चिरंजीव आनंद को साथ में लेकर आ रहा है....जो सुनकर हरेक का हृदय अत्यधिक खुशी से नाच उठेगा....प्रगट ब्रह्मस्वरूप प.पू. पप्पाजी—साक्षात् प्रभु ही ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारकर—हम सबको धन्य करने....दर्शन देने पधार रहे हैं.....

प.पू. पप्पाजी का दीवाली के दिनों में व अन्नकूट के उत्सव पर दिल्ली पधारना.....वह अचानक बनी कोई सामान्य घटना नहीं....प.पू. पप्पाजी अन्तर्यामी रूप से पु. गुरुजी का एक संकल्प पूरा करने पधार रहे हैं.....प.पू. काकाजी के पास अधूरी रह गई इच्छाएँ प.पू. पप्पाजी पूरी कर रहे हैं.....

1985 दिसम्बर के महीने में प.पू. काकाजी दिल्ली अंतिम बार पधारे थे......तब सहज ही पू. गुरुजी को संकल्प उठा था कि अब कभी एक बार प.पू. काकाजी यहाँ दिल्ली में अन्नकूट की आरती उतार जायें तो?

परन्तु......नए वर्ष पर तो प.पू. काकाजी बम्बई से यहाँ कैसे आ सकते हैं न? यह विचार करके पू. गुरुजी ने प.पू. काकाजी को इस बारे कुछ कहा–करा नहीं था और बाद में 1986 मार्च में तो प.पू. काकाजी ने स्थूल रूप से शरीर छोड़ दिया सो वह बात....फिर रह गई....। लेकिन प.पू. काकाजी की कमी प.पू. पप्पाजी महसूस नहीं होने दे रहे.... इसलिए ही अन्नकूट पर स्वयं ही चल कर दिल्ली पधार रहे हैं....वर्ना नए वर्ष और भैयादूज के दिन प.पू. पप्पाजी विद्यानगर छोड़कर कहीं जायें–वह शक्य ही नहीं....नामुमकिन है। कैसी प्रीति की पराकाष्ठा? मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की बातों में लिखा है कि हम मानते हैं कि हमें सत्पुरुष से प्रीति है लेकिन असल में तो ये गुणातीत स्वरूपों ने हम से प्रीति की है तब हम यहाँ टिके हुए हैं।

तो जब साक्षात् प्रभु ही स्वयं आरती करने पधार रहे हैं तो दर्शन, सेवा, समागम व आशीर्वाद लूटने का यह सुवर्ण मौका चूके नहीं...प.पू. काकाजी हर बार कहते थे...**जाओ अब तक का सब माफ....नया प्रारब्ध मत खड़ा करना।** और अब प्रभु स्वयं पधार रहे हैं–तो प्रार्थना करें–हे प्रभु ! बीते वर्ष की भूलों को उदार दिल से माफ करना....हम वे भूलें दोबारा repeat नहीं करें और आप तो हमारी मर्जी के मुताबिक अब तक वर्तते ही रहे हो, पर अब हम पल-पल आपकी मर्जी के मुताबिक–अखंड वर्ता करें...आपके ऐसे चरित्रों को निहार कर आपकी अनोखी प्रीति को पहचान पाएँ। दीवाली व नूतन वर्ष पर आप ही ऐसे पवित्र बुद्धियोग देना व 'अधिकस्य अधिकम्, आशीष बरसाने का अनुग्रह करना।'

❑ ❑ ❑

निमंत्रण—

❑ आप सभी को यह जानकर आनंद होगा कि दिल्ली अशोकविहार के हमारे मंदिर के पीछे के उद्यान में परिक्रमा हेतु प.पू. काकाजी की अस्थि कुंभ रखवा कर एक स्मृति स्थान बना रहे हैं जिससे भक्तों वहाँ श्रद्धापूर्वक प्रदिक्षणा कर सकें। प.पू. काकाजी को दिल्ली अत्यंत प्रिय था.... वे कई बार कहते भी थे.....दिल्ली मेरी और मैं दिल्ली का–सो अपने इस साक्षात् स्थान पर वे बैठेंगे ही.....यह अस्थि कुंभ अन्नकूट पर ठाकुरजी की आरती उतारने से पूर्व प.पू. पप्पाजी के वरद् हस्तों द्वारा पधराएँगे.....

यद्यपि दीवाली निमंत्रण कार्डस तो आपको अवश्य मिलेंगे.....परन्तु इस पत्रिका द्वारा आप हमारा हार्दिक निमन्त्रण समझ कर 26th अक्तू.'92, सोमवार के दिन सुबह अस्थि कुंभ की स्थापना व अन्नकूट का अद्भुत दर्शन करने अवश्य पधारें.....आप सभी को सपरिवार मित्रगण सहित हमारा हार्दिक निमन्त्रण है।

'काकाजी—मेरी निगाह से'

- निरपेक्ष सेवा और पराभक्ति का परम स्वरूप थे प.पू. काकाजी।
योगी बापा को प्रसन्न करने के पूर्णभाव से ही सब में रस बस हुए।
सभी की परवरिश करके, सबके हृदय में प्रभु की मूर्ति बिठाई।
उन्हें किसी से बदले में कुछ लेने का कभी विचारमात्र नहीं उठा.....

- प.पू. काकाजी सभी के थे, फिर भी सिर्फ प्रभु के थे।
योगी बापा के वारिसदार थे फिर भी संबंध वालों के दास थे।
अक्षररूप थे, सो ही तो मानव देह में विचर कर
अनंत के प्राणाधार बनकर, चैतन्यों का देहभाव पिघालकर
ब्रह्मभाव प्रगटाने की समार्थ्य रखते थे.
इसलिए ही वे सबको प्रिय थे।
उन्हें न कोई अपना–न पराया।
सब श्रीजी की संतानें और वे स्वयं सबके सेवक !
इसलिए तो वे सबके सुहृद बनकर हरेक के हृदय के स्वामी बने थे।
पू. काकाजी को मैंने सबके सेवक बनते
और
कईयों के हृदयेश्वर बनते देखे हैं।
संबंध वालों का सहन करते
और
सच्चे शिष्यों पर अनुशासन करते देखे हैं।
पंचविषयों के प्रति निःस्पृही–
फिर भी,
पराभक्ति करनी हो तब पूर्णतया लिप्त होते निहारे हैं।
देह में रहते हुए भी देहातीत अवस्था में निरंतर घूमते
उस स्वरूप के दर्शन किये हैं।
हृदय में योगीजी को प्रसन्न करने की तीव्र लगन से लगे हुए
इस महायोगी को भक्तों के वश में रहते भी देखा है।

मेरे मन में पू. काकाजी
योगी चैतन्यों के पथप्रदर्शक, सेवक, वात्सल्यमूर्ति,आत्म अनुरागी
उपदेशक के रूप में
आज भी दिव्य स्वरूप में संजोये हुए हैं।
उनके योगीरूप का, गुरुरूप का, पितारूप का और द्विय शासक स्वरूप का
मैने प्यार पाया है और धन्य हुआ हूँ।

उनकी दिव्यमूर्ति आज भी मेरे हृदय में दिव्यता का प्रकाश फैलाकर
मेरे साधना पथ को प्रकाशित करती है
यह मेरा प्रतिदिन का अनुभव है।

—पू. शांतिभाई
विद्यानगर

- पू. काकाजी यानि विदेश में गुणातीत ज्ञान की संस्था की शुरुआत करने वाले और स्वामिनारायण धर्म के प्रसार के लिए भिन्न-भिन्न देशों में जाने वाले पहले शिक्षक ! पू. काकाजी यानि बापा के क्रांतिकारी विचार को—समाज में, गृहस्थों में, युवक वर्ग में और बहनों में—सभी को समझाने वाले और पहुँचाने वाले !

—पू. रतिभाई मासा
(शिकागो)

- गुरुहरि योगीजी महाराज की सच्ची पहचान समाज को कराई हो, तो वह पू. काकाजी ने !

—पू. महेन्द्रभाई
(शिकागो)

- भगवान अक्षरपुरुषोत्तम की महिमा भारत के अन्य प्रदेशों में एवं भारत से बाहर दुनिया में प्रसार करने वाले प्रथम पू. काकाजी हैं।

—पू. गोविन्दजीभाई शाह
(शिकागो)

- पू. काकाजी द्वारा ही शिकागो में सत्संग की शुरुआत हुई।

—पू. जयबहन महेन्द्रभाई
(शिकागो)

❑❑❑

स्वामी की बातें

240. ऐश्वर्य तो दैत में भी होता है, पृथ्वी को टीप कर समेट कर ले गया। सो, इसमें माल नहीं मानना चाहिए।
प्र—4,116

241. दो प्रकार का सुख है—एक तो ज्ञान से सुखी और एक तो भगवान की मूर्ति के ध्यान से सुखी। सांख्य व योग इन दोनों में से एक हो—तो सुखी होता है। प्र—4,117

242. लड्डू खाने और पत्तल जो देह—वह फैंक देना।
प्र—4,118

243. जिसे भगवान की सही अर्थ में उपासना हुई हो उसे यदि कोई कारणवश नरक के कुंड में डाल दे, तो वहाँ भी उसे आनंद रहेगा। क्योंकि यह देह जो है, वह भी नरक का कुण्ड ही है, तब भी जीव इसमें चिपका है। प्र—4,119

244. दो प्रकार के मुक्त हैं। उनमें एक के मत से जगत मृगजल की तरह दिखाई तो पड़े, पर पीया नहीं जा सकता और एक के मत से तो जगत है ही नहीं, जैसे सूर्य के मंडल में रात्रि नहीं—वैसे। प्र—4,120

245. सौ करोड़ रुपये हों और उनमें से एकाद रुपया यदि खो जाये तो उसे हम गिनते नहीं, वैसे ही भगवान की महिमा जिसे समझ में आ गई हो, उसे किसी बात की गिनती रहे नहीं।

प्र—4,121

246. ज्ञान तो निवृत्ति में ही हो सकता है। परन्तु सारा दिन खाली तो रहा नहीं जाये, सो प्रवृत्ति में जोड़ते है, वर्ना जीव देहाभिमानी हो जाये।

प्र—4,122

247. कईयों को मन नचाता है और कई तो मन को नचाते हैं। यह बात नित्य सोचने जैसी है।

प्र—4,123

248. वासना वाला अक्षरधाम में जाये या नहीं इस प्रश्न का उत्तर महाराज ने किया कि—नीम के पेड़ पर ऊँची कोई वस्तु बंधी हो और उसे उतारने कोई परिश्रम कर रहा हो, पर उससे यदि उतारी न जाये तो और कोई उसे उतार कर दे देता है। वैसे ही यदि वासना टालने की कोशिश कर रहा हो तो उसे भगवान सहाय करते हैं।

प्र—4,124

❑ ❑ ❑

व्रतोत्सवसूची

1.	दि.	27.9.92	रविवार	नवरात्रि प्रारंभ
2.	दि.	6.10.92	मंगलवार	विजयादशमी, दशहरा प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की पार्षदी दीक्षा जयंती
3.	दि.	7.10.92	बुधवार	एकादशी, व्रत
4.	दि.	9.10.92	शुक्रवार	मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की अंतर्धान तिथि
5.	दि.	11.10.92	रविवार	शरद्पूर्णिमा, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का प्राकट्य दिन, प्र.ब्र.स्व.प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी का भागवती दीक्षा दिन
6.	दि.	22.10.92	गुरुवार	एकादशी, व्रत
7.	दि.	23.10.92	शुक्रवार	धनत्रयोदशी, धनतेरस
8.	दि.	25.10.92	रविवार	दीपावली, लक्ष्मी—शारदापूजन
9.	दि.	26.10.92	सोमवार	अन्नकूटोत्सव, नूतन वर्ष प्रारंभ, 'अन्नकूट' की आरती प्र.ब्र.स्व.प.पू. पप्पाजी महाराज करेंगे
10.	दि.	27.10.92	मंगलवार	भैयादूज
11.	दि.	30.10.92	शुक्रवार	लाभ पंचमी

PUBLISHED BY SADHU MUKUNDJIVANDAS FOR YOGI DIVINE SOCIETY,
A 103, Ashok vihar-III, Swaminarayan Marg, Kakaji Lane,
Delhi-110 052. (India) Tel. : 7229327, 7249327
Printed at Kamal Printers, IX/5866, Gandhi Nagar, Delhi-110 031